

June, 2021

VOL - 4, ISSUE – 6; JUNE, 2021

Cover Page

[Download](#)**Big -Data Information and Techno-Challenge**

Bharat Batham, Dr. Shailja Sharma

[Download Paper](#) (Page No. 1-7)

DOI: 10.51879/PIJSSL/040601

शुक्लयजुः काण्वसंहितायां भक्तितत्त्वम्

दुर्गाशरणरथः

[Download Paper](#) (Page No. 8-14)

DOI: 10.51879/PIJSSL/040602

आर्थिक आरक्षण उबलती ज़मीन उभरते सवाल

शाम लाल

[Download Paper](#) (Page No. 15-19)

DOI: 10.51879/PIJSSL/040603

Effect of Cement Alternatives on the Mechanical Properties of Concrete for the Sustainable Development

Mohd Atif Khan, Mohibullah

[Download Paper](#) (Page No. 20-25)

DOI: 10.51879/PIJSSL/040604

The Yogic Concept of Stress and Its Management: A Panchklesha Perspective

Saloni Malik, Gaurav Saurabh Sharma, Ramesh Kumar

[Download Paper](#) (Page No. 26-29)

DOI: 10.51879/PIJSSL/040605

COVID -19 and International Relations

Dr. Uma Shankar

[Download Paper](#) (Page No. 30-40)

DOI: 10.51879/PIJSSL/040606

स्त्रीवादी कहानी एवं उपन्यासों में स्त्री विमर्श

गीता यादव, प्रो. चन्दा बैन

[Download Paper](#) (Page No. 41-46)

DOI: 10.51879/PIJSSL/040607

बौद्ध-धम्म में 'नवयान' दर्शन परम्परा

डॉ. प्रदीप कुमार

[Download Paper](#) (Page No. 47-52)

DOI: 10.51879/PIJSSL/040608

लोक साहित्य : दलित आदिवासी लोकावृत्त या लोकाख्यान

मुकेश मानस

[Download Paper](#) (Page No. 53-56)

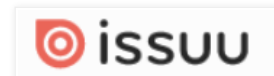
DOI: 10.51879/PIJSSL/040609

फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में चित्रित लोकजीवन

अभिषेक सौरभ

[Download Paper](#) (Page No. 57-61)

Search



स्त्रीवादी कहानी एवं उपन्यासों में स्त्री विमर्श

गीता यादव (शोध-अध्येता) एवं प्रो. चन्दा बैन
हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,

सागर, मध्य प्रदेश - 470003

सारांश

‘आरंभिक स्त्री लेखन मूलतः जीवन के साथ गहराई से जुड़ा है। यह उन्हीं विषयों और मूल्यों पर केन्द्रित है जिनकी उपस्थिति स्त्री जगत के इर्दगिर्द है। परिवेश और अनुभव के विस्तार के साथ ही कहानियों का ये लेखन क्रमशः पुष्ट और समृद्ध होता गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारी जागरण और स्त्रीशिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार के फलस्वरूप कहानी के क्षेत्र में महिला रचनाकारों की एक सशक्त पीढ़ी का उदय हुआ। जिसमें महिला कहानीकारों के द्वारा नारी चेतना को भरपूर स्थान मिला। यही कारण है कि छठे दशक के साहित्य में विविधता और गहरी मानसिक बेचैनी लेकर कथा साहित्य के क्षेत्र में पूरी तन्मयता के साथ एक पूरी पीढ़ी प्रवेश करती है जिनका लेखन लम्बे समय तक चलता रहा। इन लेखिकाओं में शिवानी, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, शशिप्रभा शास्त्री और अन्य अनेक नाम प्रमुख हैं। निश्चित रूप से महिला सशक्तीकरण के समानान्तर स्त्री विमर्श भी लगभग तीन दशकों से हर क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है, साहित्य भी इससे अछूता नहीं है, कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी आदि में स्त्री-विमर्श एक वैचारिक क्रान्ति के रूप में बिल्कुल नये संस्करण के रूप में उपस्थित है जिसमें स्त्री-विमर्श के विभिन्न आयामों को देखने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द: स्त्रीवादी कहानी, उपन्यास, असमानता, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, स्त्री विमर्श

प्रस्तावना

‘स्त्रीवाद’ दो शब्दों से मिलकर बना है- स्त्री एवं वाद। जिसमें वाद एक प्रत्यय है, जिसका प्रयोग किसी मूल शब्द के साथ किया जाता है। यह जिस किसी भी शब्द के साथ जुड़ता है, उसके अर्थ में एक विशेष प्रकार का परिवर्तन कर उसकी व्याख्या को किसी विशेष पक्ष में वर्णित कर देता है। जैसे- राष्ट्रवाद, उदारवाद, नारीवाद या स्त्रीवाद आदि। वाद का अन्य अर्थ- उक्ति विचार कहना कथन आदि भी है।

स्त्रीवाद एक ऐसी विचारधारा है जो स्त्री व पुरुष के समान अधिकारों पर बल देती है। स्त्री और पुरुष के बीच बहुत सी असमानताएँ न तो प्राकृतिक हैं और न तो आवश्यक, स्त्रीवाद के अनुसार इसे बदला जाना चाहिए। स्त्रीवाद के अनुसार स्त्री और पुरुष के बीच असमानता का मुख्य कारण है पितृसत्ता। पितृसत्ता एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें पुरुष को प्रधान समझा जाता है और इस पुरुष प्रधान समाज में स्त्री को हमेशा दोयम दर्जे का समझा

जाता रहा है। स्त्रीवाद जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के बराबर स्त्रियों के अधिकारों के समर्थन में उत्पन्न हुआ एक सामाजिक आन्दोलन है। यह एक ऐसा विचार है जो स्त्री पुरुष के बीच असमानता को अस्वीकार करता है और स्त्री के सशक्तीकरण पर बल देता है। महिला सशक्तीकरण के समानान्तर स्त्री विमर्श भी लगभग तीन दशकों से हर क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है, साहित्य भी इससे अछूता नहीं है, कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी आदि में स्त्री-विमर्श एक वैचारिक क्रान्ति के रूप में बिल्कुल नये संस्करण के रूप में उपस्थित है जिसमें स्त्री-विमर्श के विभिन्न आयामों को देखने का प्रयास किया गया है। आधुनिक युग में गद्य की शुरुआत से विभिन्न साहित्यिक विधाओं का उदय हुआ जिसमें पुरुषों के साथ-साथ नारियों ने भी अपनी लेखनी से साहित्य को समृद्ध करने में विशेष योगदान दिया और कहानी उपन्यास जैसी विधाओं में स्व की अनुभूतियों के साथ-साथ विभिन्न सामाजिक समस्याओं

पर लेखनी चलाकर न केवल स्त्री लेखन को समृद्ध किया अपितु हिन्दी साहित्य की निधि को अमूल्य रत्नों से भर दिया।

शोध-विस्तार

हिन्दी कथा साहित्य में सर्वप्रथम बंग महिला के छद्म नाम से रचना करने वाली राजेन्द्र बाला घोष ने अपनी कहानी 'दुलाई वाली' जो हिन्दी की पहली कहानी की बहस में शामिल है में स्त्री अधिकारों पर कलम चलायी। स्त्री के संघर्ष उसकी पीड़ा तथा अन्तर्मन की दुःखती रंग को छेड़कर इन्होंने उसे मुक्ति का मार्ग दिखाया। सरस्वती पत्रिका में इनके नाम से तीन कहानियाँ 'कुंभ में छोटी बहू', 'चन्द्र देव मेरी बाते', तथा 'दुलाई वाली' छपी। कहानियों के अतिरिक्त स्त्रियों की शिक्षा, गृहचर्चा, हमारे देश की स्त्रियों की दशा, संगीत और सूई का काम आदि स्त्री विषयक लेखों में स्त्री शिक्षा पर जोर तथा बाल विवाह और विधवाओं की स्थिति के साथ-साथ स्त्रीपुरुष के बीच होने वाले भेद-भाव और स्त्रियों को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखने पर गहरा क्षोभ व्यक्त किया है। इसीलिए नमिता सिंह लिखती हैं, "बंग महिला अपनी कलम के माध्यम से बीसवीं सदी के आरंभिक काल में नारी मुक्ति अभियान की एक महत्वपूर्ण इकाई बनी।"¹

स्वतंत्रता से पूर्व भी अनेक महिला कथाकारों ने कहानी रचना के क्षेत्र में कदम रखा जिन्हें गोपाल राय ने अपनी हिन्दी कहानी के इतिहास में उल्लिखित किया है जिनमें उषा देवी मित्रा, कमला चैधरी, चन्द्रकिरण सौनरिक्षा, बंग महिला, सुभद्रा कुमारी चैहान, सुमित्रा कुमारी सिन्हा, सुशीला आगा, और होमवती देवी। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक नाम भी मिलते हैं जिन्हें शायद पुरुषवादी सोच के कारण अनदेखा कर दिया गया। इन नामों में हैं- चन्द्रप्रभा देवी, (नगर के पथ पर) कहानी संग्रह), तेजरानी पाठक (जंजलि एकादशी), पुष्पा भारती (इंकलाव), यशोदा देवी (भ्रम), रामेश्वरी देवी चकोरी (धूप छांह तथा अन्य कहानियाँ), शिवरानी देवी (कौमुदी, नारी हृदय), सत्यवती मलिक (दो फूल), हीरादेवी चतुर्वेदी (उलझी लड़ियाँ) आदि प्रमुख हैं।

इस काल में ऐतिहासिक और पौराणिक को आधार बनाकर यशोदा देवी ने 'पृथ्वीराज की रानी', 'सती का प्रश्न', हरिश्चन्द्र तारामती' जैसी अनेक कहानियाँ लिखी जो इतिहास पुराण से संबंधित होते हुए भी स्त्री की गौरवमयी छवि को रेखांकित करने में महत्वपूर्ण भूमिका

अदा करती हैं। इसी प्रकार से प्रियंवदा देवी के दो कहानी संग्रह 'धर्मात्मा चाची' और 'अभागा भतीजा' भी हैं। प्रारंभिक दौर की इन कहानियों में एक तरफ स्त्री केन्द्रित उपदेशात्मक कहानियाँ हैं तो दूसरी तरफ आर्य समाज के प्रभाव स्वरूप स्त्री जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करने वाली कहानियाँ भी हैं। "स्त्री शिक्षा की जरूरत को रेखांकित करती श्रीमती सम्प्रिया देवी की कहानी 'एक अनपढ़ स्त्री की यात्रा' पति द्वारा पत्नी के अपमान का विरोध करती श्रीमती हुक्म देवी गुप्ता की कहानी 'पुरुष जाति के सच्चे प्रेम और पत्नीव्रत का अभाव', 'आभागी नारायणी', संयुक्त परिवार में स्त्री की स्थिति का वर्णन करती श्रीमती गिरजा देवी की कहानी 'एक हिन्दू कुल का रहस्य', सुश्री मंजुलिका की 'पहचान' तथा विवाह के निर्णय में स्त्री की प्रमुखता पर बल देती श्रीमती विद्यावती की 'लीलावती' आदि कहानियाँ भावी स्त्री कहानी की पीठिका तो तैयार कर रही थीं, अपने लेखन के सरोकारों को विस्तार दे रही थीं। यह सच है कि इतिहास में अपनी पहचान को रेखांकित करना और उसी के अनुरूप स्त्री व्यक्तित्व का निर्माण भी इस काल की स्त्री कहानियों का एक प्रमुख एजेंडा था।"²

इस प्रकार से प्रारंभिक स्त्री कहानियाँ मूल स्त्री जीवन की सामाजिक समस्याओं से जुड़ी हैं जिसमें स्त्री पराधीनता के साथ-साथ देश की पराधीनता का वर्णन भी मिलता है। डॉ. क्षमाशंकर पाण्डेय लिखते हैं, "आरंभिक स्त्री लेखन मूलतः जीवन के साथ गहराई से जुड़ा है। यह उन्हीं विषयों और मूल्यों पर केन्द्रित है जिनकी उपस्थिति स्त्री जगत के इर्दगिर्द है। परिवेश और अनुभव के विस्तार के साथ ही कहानियों का ये लेखन क्रमशः पुष्ट और समृद्ध होता गया।"³ सन साठ के दशक के पहले कुछ महत्वपूर्ण लेखिकायें कहानी क्षेत्र में आती हैं जिनमें श्रीमती शिवरानी देवी, सुभद्राकुमारी चैहान, 'कमला चैधरी', और होमवती देवी का नाम प्रसिद्ध है।

शिवरानी देवी के दो कहानी संग्रह 'नारी हृदय' और 'कौमुदी' प्रकाशित हुए हैं जिनकी कहानियाँ अपने समय की समस्याओं से जूझते हुए दहेजप्रथा, अनमेल विवाह, स्त्री के प्रति अन्याय, उत्पीड़न, बहुविवाह, विधवा विवाह जैसी समस्याओं से संघर्ष करती हुई स्त्रियों के जीवन से संबंधित है यही कारण है कि उनकी अधिकांश कहानियाँ नायिका प्रधान हैं। आँसू की दो बूंदें, नर्स, और

पुनर्मिलन ऐसी ही कहानियाँ हैं जिसमें ओजस्वी नारी पात्रों के दर्शन होते हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान जिनकी कहानियों का मुख्य स्वर एक ओर देश की पराधीनता से मुक्ति के लिए है तो दूसरी ओर अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए संघर्ष करती स्त्री का स्वर। उनकी कहानियों के तीन संग्रह 'बिखरे मोती', 'उन्मादिनी', और सीधे सादे चित्र उपलब्ध हैं। इन कहानियों में प्राचीन रूढ़ियों और संस्कारों तथा पितृसत्तात्मक व्यवस्था में पुनरीक्षण की माँग तो दिखायी पड़ती है स्त्री के स्वतत्त्व और अस्मिता के अधिकार की माँग भी दिखायी पड़ती है। डॉ. नमिता जयसवाल लिखती हैं, "इनकी रचनाओं में स्त्री अस्मिता, स्त्रीमुक्ति की सही तस्वीर उभरकर आती है जो आगे की महिला लेखिकाओं के लिए नया द्वारा खोलती है। निःसंदेह उनकी कहानियाँ विकास कालीन लेखिकाओं के लिए आदर्श स्वरूप सिद्ध हुई हैं।"⁴ सुभद्रा कुमारी चौहान और महादेवी वर्मा के प्रेरणास्वरूप स्वतंत्रता प्राप्ति के आसपास महिला कथाकारों की एक और पीढ़ी इन रचनाकारों में सम्मिलित हो जाती है। जिनमें दिनेश नन्दिनी, सुमित्रा कुमारी सिन्हा, रजनी पनिकर और कंचन लता सब्बरवाल हीरादेवी चतुर्वेदी आदि प्रमुख हैं। इनकी कहानियों में स्त्री संघर्ष के विभिन्न रूपों का चित्रण है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारी जागरण और स्त्रीशिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार के फलस्वरूप कहानी के क्षेत्र में महिला रचनाकारों की एक सशक्त पीढ़ी का उदय हुआ। जिसमें महिला कहानीकारों के द्वारा नारी चेतना को भरपूर स्थान मिला। यही कारण है कि छठे दशक के साहित्य में विविधता और गहरी मानसिक बेचैनी लेकर कथा साहित्य के क्षेत्र में पूरी तन्मयता के साथ एक पूरी पीढ़ी प्रवेश करती है जिनका लेखन लम्बे समय तक चलता रहा। इन लेखिकाओं में शिवानी, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, शशिप्रभा शास्त्री और अन्य अनेक नाम प्रमुख हैं। इनमें शिवानी की 'स्वयंसिद्धा', 'रति विला', 'पुष्पाहार', 'किशुन ली की डॉट', मेरी प्रिय कहानियाँ, प्रसिद्ध है तो शशिप्रभा शास्त्री की 'अनुतरित', 'दो कहानियों के बीच', 'जोड़ बाकी' कहानी संग्रह प्रसिद्ध है। उषा प्रियंवदा 'एक कोई दूसरा नहीं', 'जिन्दगी और गुलाब के फूल', तथा 'कितना बड़ा झूठ' कहानी संग्रह है। मन्नू भण्डारी जिनका नाम नयी कहानी के साथ जोड़ा जाता है इन्होंने भी 'एक प्लेट सैलाब', 'यही सच है', 'मेरी

प्रिय कहानियाँ', 'मैं हार गयी', 'प्रतिदिन' जैसी कहानी संग्रह में नारी हृदय के अनकहे मूक सच को पूरी तटस्थता और ईमानदारी के साथ अपनी कहानियों में उतारा है। इन लेखिकाओं की कहानियों ने स्त्रियों की दशा-दिशा, चिंतन और उसकी अभिव्यक्ति को एक नया रूप दिया।

सन् साठ के बाद सत्तर और अस्सी के दशक में हिन्दी कथा साहित्य के क्षेत्र में अनेक नामों की वृद्धि हुई जिन्होंने स्त्रियों के जीवन से जुड़े अनेक सवालों को उठाकर विश्व भर में हलचल मची दी। 'फूल नहीं चिंगारी है हम भारत की नारी हैं' यह चर्चित नारा इसी समय का है। इस दौर में स्त्री चेतना का उत्कर्ष दिखायी देता है। जिसमें औरतें वस्तु न होकर हांड-मांस की मनुष्य बन गयी। हिन्दी में यह पहल कृष्णा सोबती ने 'मित्रो मरजानी' लिखकर की। इसके बाद मन्नू भण्डारी, मृदुला गर्ग, दीप्ति खण्डेलवाल, मंजुल भगत, चित्रा मुदगल, प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा, राजी सेठ, नासिरा शर्मा ने स्त्री लेखन की परंपरा को समृद्ध किया।

ममता कालिया के कहानी संग्रह 'प्रतिदिन', 'सीट नं. छः', 'छुटकारा' और 'एक अदत औरत' तथा 'उसका यौवन' जिसमें ममता कालिया इस बात को स्पष्ट करती हैं कि आज के बदलते परिदृश्य में नारी के प्रति अपेक्षाएं न बदलना असमंजस की स्थिति उत्पन्न करता है। इसके साथ ही मृदुला गर्ग की कहानियाँ भी पति-पत्नी के बीच फैले हुए दाम्पत्य के बीच घुटन, बनते बिगड़ते आपसी रिश्ते को वेलाग तरीके से व्यक्त करती हैं। "मृदुला गर्ग के प्रमुख कहानी संग्रह हैं, 'कितनी कैदे', 'डेफोडिल जल रहे हैं', 'ग्लेशियर से', एवं टुकड़ा-टुकड़ा आदमी', 'अपना परिवेश अपनी मिट्टी', 'अपनी दिनचर्या', 'अपनी पहचान', 'अपना तर्क', 'अपनी स्वायत्तता', औरत के शब्द कोश से जुड़े ऐसे नये शब्द हैं जो मृदुला गर्ग की केन्द्रीय सत्ता है।"⁵

दीप्ति खण्डेलवाल अपनी संवेदनशील दृष्टिकोण के साथ नारी मन के तह में प्रवेश करते हुए 'कड़वे सच', धूप के एहसास, सलीबपर, दो पल की छांव तथा नारीमन जैसी कहानी संग्रह लिखती हैं। मालती जोशी के प्रमुख कहानी संग्रह हैं 'पटाक्षेप', 'मध्यान्तर', 'पराजय', 'एक घर का सपना' है। चित्रा मुदगल ऐसी कहानीकार जिनमें नारी मुक्ति का स्वर प्रधान होते हुए भी वही उनके लिए सब कुछ नहीं हैं। इस दृष्टिकोण से उनकी प्रमुख कहानी संग्रह 'जहर ठहरा हुआ', 'लाक्षागृह', 'अपनी वापसी', 'इस हमाम में', 'ग्यारह लम्बी कहानियाँ आदि प्रसिद्ध हैं।

स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व की स्थापना के लिए प्रयासरत नासिरा शर्मा के प्रमुख कहानी संग्रह- ‘शामी कागज’, ‘इन्नेमरियम’, ‘संगसार’, ‘पत्थर गली’ आदि हैं। इसके अतिरिक्त स्त्री-विमर्श की दृष्टि से लेखन करने वाली लेखिकाओं में अनेकों नाम हैं। “प्रतिमा वर्मा की कहानी संग्रह ‘एक सुबह ओर बधे पावों का सफर’, सूर्यबाला के कथा संग्रह हैं, “एक इन्द्रधनुष जुवैदा के नाम”, ‘दिशा हीन’। निरूपमा सोबती की कहानियाँ ‘खामोशी को पीते हुए’, ‘आतंक बीज’, ‘कच्चे मकान’, ‘भीड़ में गुम’, में संकलित है। राजी सेठ के कहानी संग्रहों के नाम ‘अंधेरे मोड़ से आगे’, तीथरी हथेली।”⁶

इस प्रकार से स्त्री के संघर्षों और मुक्ति के सवाल को लेकर अनेक लेखिकाओं ने हिन्दी कहानी के क्षेत्र को समृद्ध किया है और आज भी कर रही हैं। स्त्री लेखिकाओं की नई पीढ़ी भी स्त्री मुक्ति के तमाम सवालों को आज के समय की जटिलताओं के साथ जोड़कर देख रही हैं। गीतांजलि श्री वीणा सिन्हा, नीरज माधव, जया जादवानी, कृष्णा अग्निहोत्री, कात्यायनी उर्मिला शिरीष, अनामिका, अरुन्धती राय तथा तसलीमा नसरीन ये सभी लेखिकाएं स्त्री जीवन के उन तमाम सवालों से टकराती हैं जिनको उठाने से पुरुष समाज हमेशा मुँह मोड़ता आया है। इनके स्त्रीपात्र अपने अधिकारों के प्रति सचेत हैं।

कहानी की अपेक्षा उपन्यास लेखन में महिलाओं का आगमन काफी देर से हुआ और महिलाओं में शिक्षा एवं जागरूकता के अभाव के कारण जिन उपन्यासों की रचना हुई भी वो समाज सुधार एवं उपदेशात्मक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर ही लिखे गये जिनमें नारी के केवल उन रूपों के दर्शन होते हैं जो पुरुष प्रचारित परंपरागत रूप से प्रचलित थे। उर्मिला गुप्ता लिखती हैं, “उस युग में स्त्री शिक्षा का अभाव था, यहाँ तक की नारी जाति सुचारू गृह संचालन और संतान पालन जैसे व्यावहारिक ज्ञान में ही उतनी पारंगत न थीं। स्वयं वे लेखिकाएँ जो अपने युग की कुछ अधिक चेतनशील महिला थीं, अधिक शिक्षित न थी यही कारण है कि इनके उपन्यासों के मुख्य लक्ष्य नारी को परिवार और समाज के प्रति धर्मपालन की शिक्षा देना रहा है।”⁷

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि, हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में स्त्री-विमर्श की शुरुआत प्रेमचंद के ‘सेवासदन’, ‘निर्मला’ जैसे उपन्यासों से होती है। इनके उपन्यासों में स्त्री मुक्ति की चिंता के साथ-साथ स्त्री के

विविध रूपों का रेखांकन किया गया है। प्रेमचंद के प्रभाव स्वरूप तथा समाज के बदलते परिवेश के परिणाम स्वरूप स्त्रियों ने भी उपन्यास लेखन के क्षेत्र में प्रवेश किया तथा अपनी स्त्री सुलभ अंतर्दृष्टि के माध्यम से स्त्री जीवन के उन पहलुओं को शब्द दिया जो पुरुषों के अनुभव दायरे में न आने के कारण अछूते रह गये थे। इस काल में अनेक महिला लेखिकाओं का आगमन हुआ जिनमें उषा देवी मित्रा और कंचनलता सब्बरवाल का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। उषा देवी मित्रा ने अपने उपन्यास ‘जीवन की मुस्कान’ ‘पिया’, ‘वचन का मोल’ और ‘नष्ट नीड’ में नारी के दर्द उनकी व्यथा उनके अंतर्मन की कोमलता और प्रेम की टीस का यथार्थ छवि को समाज के सामने प्रस्तुत किया। कंचन लता सब्बरवाल पुरानी पीढ़ी के समर्थ उपन्यासकारों में हैं जिनके उपन्यास ‘मूक प्रश्न’, ‘भोली मूक’, ‘मूक तपस्वी’, ‘भटकती आत्मा’, ‘कांटो की चुभन’ आदि में नारी अपने अस्तित्व और अस्मिता के लिए संघर्ष करती दिखाई तो पड़ती है लेकिन वह दुविधा से ग्रस्त है क्योंकि वह न तो परंपरागत मूल्यों में सुखी है और न ही वह अपने लिए किसी नयी दिशा की तलाश कर पाती है इस कारण इनके उपन्यासों की नारी यथार्थ बोध की नई दिशा प्रदान नहीं कर पाती।

स्वतंत्रता के बाद नारियों में शिक्षा एवं जागरूकता तथा पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान के प्रभाव स्वरूप उनमें जागरूकता आई जिसके परिणाम स्वरूप उनका लेखन भी उपदेश एवं समाज सुधार के नैतिक घेरे से निकलकर यथार्थ के धरातल पर प्रतिष्ठित हुई जहाँ उन्होंने नारी के वास्तविक अधिकारों के प्रति पूर्णतः सजग होकर लेखन के माध्यम से अपने विरोध को दर्ज किया। इन लेखिकाओं में रजनी परिकर, चन्द्र किरण सौनरेकशा, महाश्वेता देवी, आशापूर्णा देवी, आदि का नाम लिया जा सकता है इनके उपन्यासों में स्त्री जागरूकता का जो स्वर फूटा वह आधुनिक स्त्री की परिवर्तित हो रही मनोभूमि का ज्वलंत दस्तावेज है। इसी समय उषा देवी मित्रा, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, शिवानी मन्नू भण्डारी, दिनेश नन्दिनी डालमिया, इंदूबाली, शशिप्रभा शास्त्री, मृदुला गर्ग आदि अनेक उपन्यास लेखिकाएँ भी सामने आयीं जिनके उपन्यासों में स्त्री संघर्ष के विभिन्न रूपों को भोगे हुए यथार्थ और अनुभूत यथार्थ को आधुनिक माध्यम से प्रस्तुत किया गया। ‘कृष्णा सोबती’ की ‘डार से विछुड़ी हुई’, शिवानी की ‘मायापुरी’, ‘रजनी पनिकर’ की ‘काली

लड़की' इंदूबाली की 'दो हाथ' तथा 'साये प्यार की अनुभूति' उषा प्रियंवदा की 'पचपन खंभे लाल दीवारे', चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की 'चंदन-चांदनी', तथा शान्ति जोशी के 'उदास पत्ने' आदि प्रमुख उपन्यास हैं।

इस समय तक संख्यात्मक दृष्टिकोण से जहाँ महिला लेखिकाओं की संख्या में वृद्धि हुई वहीं परिणात्मक रूप से भी उनकी लेखनी की धार ज्यादा सचेतन और पैनी हुई लेकिन "इस काल का महिला लेखन पुरुष लेखन की तुलना में पूरी तरह से बहुआयामी और वैविध्यपूर्ण नहीं हो पाया। बावजूद इसके इस युग की महिला लेखिकाओं ने भावी हिन्दी महिला लेखन की दृढ़ एवं विस्तृत पृष्ठभूमि तैयार की, इसमें कोई संदेह नहीं है।"⁸

1970 से 2000 के बीच का समय हिन्दी महिला उपन्यास लेखन का उत्कर्ष काल माना जा सकता है क्योंकि अनगिनत महिला लेखिकाओं ने स्त्री जीवन के विभिन्न संदर्भों को परंपरा से विमुक्त होकर देखा तथा स्त्री जीवन के विभिन्न पक्षों, रूपों को बड़ी संजीदगी के साथ अपने लेखन में अभिव्यक्त किया इसी कारण पितृसत्तात्मक शोषण से मुक्ति के खिलाफ इनके लेखन में आवाज भी उठती है। न केवल कथ्य अपितु रूप की दृष्टि से भी इस काल की महिला लेखिकाओं में व्यापक परिवर्तन दिखायी पड़ता है। इन लेखिकाओं में शशिप्रभा शास्त्री, शिवानी, मृदुला गर्ग, मंजुल भगत, कृष्णा सोबती, दीप्ति खण्डेलवाल, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, निरूपमा सोबती, मेहरुनिस्सा परवेज, राजी सेठ, ममता कालिया, चित्रा मुदगल, मृणाल पाण्डेय, सुनीता जैन, कुसुम अंसल, अलका सरावगी, मैत्रेयी पुष्पा, सूर्यबाला प्रभा खेतान, आदि नाम प्रमुख हैं।

इन लेखिकाओं के उपन्यासों में स्त्री चेतना का ऐसा उत्कर्ष दिखाई पड़ता है जो स्त्री की बदलती हुई भूमिका से तो जुड़े ही हैं उसकी अस्मिता के प्रश्न से भी जुड़े हुए हैं इसकी शुरुआत कृष्णा सोबती ने 'मित्रो मरजानी' लिखकर की। स्त्री की आर्थिक आत्म निर्भरता इन उपन्यासों की प्रमुख विशेषता है। पुरुषों द्वारा अपमानित होकर वे टूटती नहीं हैं बल्कि अपने बजूद को एक नयी पहचान देती हैं। प्रभा खेतान की 'छिन्नमस्ता' की प्रिया से या चित्रा मुदगल की 'एक जमीन अपनी' की अंकिता या फिर मृदुला गर्ग की 'कठगुलाब' के स्त्रीपात्र सभी पतियों द्वारा तिरस्कृत किए जाने पर अपना अलग-अलग मार्ग चुन लेती हैं। इनके कथा साहित्य में स्त्री द्वारा यौन वर्जनाओं का अतिक्रमण करने का साहस भी एक नयी प्रकार की स्त्री

स्वतंत्रता को जन्म देती है। चित्रा मुदगल की 'एक जमीन अपनी' की नीता तथा मैत्रेयी पुष्पा की रेशम और सारंग दोनों ही बिना विवाह किये तथा दूसरे पुरुष से गर्भाधारण करने और संतान को जन्म देने को अनैतिक नहीं मानती। ये स्त्री पात्र स्त्रीत्व पर हमला होने पर समाज के सामने अपराध बोध महसूस करने की बजाय अपराधी को सजा दिलाने की आवाज उठाती हैं। चन्द्रकान्ता की कथासंतीसर में नसीम बलात्कार को हिंसा का ही एक रूप मानती है। मैत्रेयी पुष्पा के 'इदन्नमम्' नमिता सिंह की 'अपनी सलीबे' तथा मृदुला गर्ग की 'कठगुलाब' में स्त्री संघर्ष का एक नया ही रूप दिखायी पड़ता है। 'इदन्नमम्' की मंदा जिस तरह से अपने व्यक्तिगत प्रेम को भुलाकर गाँव के मजदूरों में एकता तथा गाँव में फैले शोषण तंत्र के खिलाफ आवाज उठाती है वह एक स्त्री के दृष्टिकोण से नितान्त साहसिक काम है।

निष्कर्ष

इस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर महिला लेखिकाओं ने पितृसत्तात्मक दोहरे मापदण्डों को महसूस कर समाज की उन तमाम परंपराओं और रूढ़ियों को नकार दिया जो उसे हाडमांस की मनुष्य न समझकर वस्तु समझती थी। इसी कारण इस परिवेश में उन्होंने अपने-अपने उपन्यासों के द्वारा नारी मन को जागृति करने, उन्हें झकझोरने और उन्हें उनके अधिकारों के प्रति सचेत करने का काम किया। 20वीं सदी के अंतिम दशक की संचार क्रांति और बाद में भूमण्डलीकरण और बाजारवाद के बढ़ते प्रभाव ने जहाँ स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन ला दिया वही स्त्री लेखन में भी इसका प्रभाव व्यापक रूप से दिखायी पड़ने लगता है इसी कारण पहले का लेखन जहाँ पितृसत्ता के बंधन से बंधा था किन्तु आज की स्त्री लेखिकायें अपनी बंचित स्थिति की परंपरागत नियति से हटकर पुरुष समाज को न केवल चुनौती देती हैं अपितु उसे कटघरे में खड़ा कर अपनी सदियों से बंचना और शोषण का हिसाब भी मांगती है। किन्तु समकालीन महिला लेखन की एक प्रमुख समस्या यह है कि पाश्चात्य सभ्यता और अपने विकास की अंधी दौड़ में वह अपने समाज और संस्कृति से कटती जा रही है इसीलिए अधिकांश उपन्यासों का विषय अर्थ और काम पर ही आधारित है। जब कि विवाहेतर कामुक संबंधों की वकालत और बहुपुरुष संबंधों की औचित्य स्थापना जैसे तथ्य स्त्री मुक्ति और स्त्री अस्मिता के अधिकार नहीं हो

सकते। समकालीन स्त्री लेखिकाओं को इस खतरे से सावधान रहना चाहिए क्योंकि यह भी पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था का मायाजाल है जिसमें स्त्रियाँ फँसती जा रही हैं।

इन सबके बावजूद स्त्री लेखिकाओं की नयी पीढ़ी में ऐसी अनेक लेखिकाएँ हैं जो स्त्री मुक्ति के तमाम सवालों को आज के समय की जटिलताओं के साथ जोड़कर देख रही हैं। जिनमें गीतांजलि श्री वीणा सिन्हा, नीरजा माधव, अल्का सरावगी, जया जादवानी, कृष्णा अग्निहोत्री, कात्यायनी, उर्मिला शिरिष, अनामिका, अरून्धती राय, तथा तस्लीमा नसरीन प्रमुख हैं जिनके उपन्यास स्त्री जीवन के उन तमाम सवालों से टकराते हैं जिनको उठाने में पुरुष समाज हमेशा मुँह मोड़ता आया है। इनके स्त्रीपात्र अपने अधिकारों के प्रति सजग एवं सचेत हैं तभी तो वह कहती है, “नहीं मैं अंधेरे में नहीं खोना चाहती। स्वीकार करना चाहती हूँ कि मैं मनुष्य हूँ, और पिता, पति या संरक्षक के रूप में किसी पुरुष के प्रति समर्पित होने की अपेक्षा अपनी समस्त ऊर्जा को मानव में विस्तारित करना चाहती हूँ।”⁹ इस प्रकार हम देखते हैं कि स्त्रीवादी कहानी एवं उपन्यासों में स्त्री विमर्श के भरपूर चित्रण दिखाई देते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. नमिता सिंह, स्त्री प्रश्न, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृ. 61
2. डॉ. क्षमाशंकर पाण्डेय, भारतीय नारीवाद स्थिति और संभावना, श्रुति बुक्स, गाजियाबाद, संस्करण 2018, पृ. 119
3. डॉ. क्षमाशंकर पाण्डेय, भारतीय नारीवाद स्थिति और संभावना, श्रुति बुक्स, गाजियाबाद, संस्करण 2018, पृ. 121
4. डॉ. नमिता जायवाल, स्त्री अस्मिता और समकालीन महिला उपन्यास, आनंद प्रकाशन, कोलकत्ता, संस्करण 2017, पृ. 98
5. सुमन राजे, हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृ. 291
6. सुमन राजे, हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृ. 293
7. डॉ. नमिता जायसवाल, स्त्री अस्मिता और समकालीन महिला उपन्यास, आनंद प्रकाशन, कोलकत्ता, संस्करण 2017, पृ. 96
8. डॉ. नमिता जायसवाल, स्त्री अस्मिता और समकालीन महिला उपन्यास, आनंद प्रकाशन, कोलकत्ता, संस्करण 2017, पृ. 104
9. वीणा सिन्हा पथ-प्रज्ञा, पृ. 29